मानवतावादी पार्टी की विचारधारा

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तिकाएँ 'विचारधारा' और 'कार्य पद्धति' जन–साधारण के लिए नहीं हैं बल्कि ये मानवतावादी पार्टी के अत्यंत सक्रिय कार्यकर्ताओं के लिए हैं।

जनसाधारण को हमारे इश्तहार वाले परचों तथा समाचार–पत्रों में सार्थक सामग्री मिल सकती है। ये पुस्तिकाएँ मानवतावादी पार्टी पर अब तक तैयार सामग्री से ज़्यादा सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री के रूप में संकलित की गई है।

चूँकि विभिन्न सदस्यों तथा परिषदों ने अपने अनुभवों और अनिवार्यताओं को ध्यान में रखते हुए इस सामग्री को बनाने में अपना योगदान दिया है। अतः इस पुस्तिका में आपको लेखन शैली की एकरूपता, व्याख्या की गहराई में विविधता आदि देखने को मिल सकती है।

हमें आशा है कि हमारे सक्रिय कार्यकर्ता इन छोटी–सी असुविधाओं के लिए हमें क्षमा करेंगे क्योंकि इस पुस्तिका को वे मुख्य विचारधारा के स्पष्टीकरण तथा संगठनात्मक मुद्दों को समझने के लिए एक व्यावहारिक संसाधन के रूप में पाएँगे। इस अर्थ में इस पुस्तिका से प्राप्त होने वाली अभिप्रेरणा और दिशा–निर्देश गतिशीलता लाने में सहायक होंगे। इस पुस्तिका में जो कुछ भी लिखा गया है वह केवल हमारे वर्तमान स्थिति को व्यक्ति करता है इसलिए भविष्य में इसके सुधार एवं अद्य तन करने की गुंजाइश बनी रहेगी।

वैचारिक स्पष्टीकरण के लिए हम इन पुस्तिकाओं के औपचारिक एवं अनौपचारिक पठन, अध्ययन एवं चर्चा का भरपूर समर्थन करते हैं।

सिद्धांतों की घोषणा

आज ऐसी कौन–सी व्यवस्था, कौन–सा देश, कौन–से लोग, कौन–से संगठन हैं जो इन दिनों सामान्य संकटों से पतापन कर रहे हैं।

इस स्थिति को कारण न तो सितारे या मौसम हैं न ही भोजन और खुराक। यह सब बेरोज़गारी, महँगाई, हिंसा, उत्पीड़न, अत्याचार, भेद–भाव और मृत्यु के कारण हैं।

इस आपातकालीन स्थिति में, पहले की तरह, मानवतावाद मनुष्यों द्वारा, मनुष्यों के लिए सामाजिक संबंधों के गठन का काम करता है।

अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि मानवतावाद मनुष्यों द्वारा मनुष्यों के लिए सामाजिक संबंधों के गठन का काम करता है। अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि मानवतावाद अँधेरे और निरंकुश शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया करता है, यह वैज्ञानिक जूझ–बुझ का प्रकाश लाता है और सामाजिक संगठन के प्रगतिवादी रूप को प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में उसका भोलापन, निष्कपटता परिपक्व हुई है। उसने अपनी अस्मिता को पहचाना है, साथ ही अपनी सीमाओं तथा संभावनाओं के प्रति जागरुकता आई है।

मानवतावाद मानव–अस्मिता से प्रारंभ होता है न कि उन सिद्धांतों से जो पूर्ववर्ती मानव–जीवन को सांसारिक यथार्थ के रूप में व्यक्त करते हैं। मानवतावाद उन पूर्वकालीन दार्शनिक विचारधाराओं की व्याख्या को स्वीकार नहीं करता जो मानव–अस्मिता के लिए तत्त्वमीमांसा, समाजशास्त्र और ऐतिहासिकता को आवश्यक मानते हैं। इसके विपरीत यह केवल मानव–अस्मिता से प्रारंभ होता है–जीवंत और मूर्त जिसके अनुसार एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण में संसार का जो रूप जै–उसे संगठित

किया जा सकता है।

इन दिनों न तो ठोस धरातल से विहीन वैज्ञानिक सिद्धांतों ने मानवतावाद को संतुष्ट किया है और न ही अंधविश्वासों के दिखावटी मानवीय स्वभाव ने मानवतावाद को संतुष्ट किया है जो सही और ग़लत का निर्धारत करता है।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि सामाजिक तथ्यों के संदर्भ में मानवतावाद के मुख्य बिंदु का विचार क्या है? ये बिंदु या विचार इस प्रकार हैं–

1. यह संसार, जिसमें मनुष्य जन्म लेता है, वह एक सामाजिक संसार है जो मानव संरपतों से निर्मित हुआ है।
2. संसार मिलनधारिता या भलमानसाहत का उद्देश्य मानवतावाद का प्रचार–प्रसार करना है। मानवतावाद के अर्थ को समझाने में समाजीकरण एक महत्त्वपूर्ण साधन है।
3. संसार की पुष्टि या खंडन के संदर्भ में स्वतंत्रता ही मानव–अस्मिता है। मानव–संकतप ही किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाते हैं कि वह स्थितियों की पुष्टि या खंडन कर सके। इसलिए केवल एक साधारण प्रतिरूप बनकर ही न रहे।
4. समाज एक वास्तविकता है। इस तरह मानव भी सामाजिक है। और उसका अपना वैयक्तिक इतिहास है। स्वभाव केवल मानव–शरीर को प्रभावित करता है न कि संकलपनीयता को जो कि मानवीयता को परिभाषित करती है।
5. स्वतंत्रता के द्वारा मनुष्य उन सामाजिक स्थितियों की पुष्टि अथवा खंडन का चयन करता है, जिनमें वह पैदा होता है, बड़ा होता है और फिर मृत्यु को प्राप्त होता है। कोई भी व्यक्ति उन सामाजिक स्थितियों के द्वंद्व के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता जिन स्थितियों में से चयन की उपेक्षा कर सकता है। उसे उन स्थितियों से चयन की उपेक्षा कर सकता है। उसे उन स्थितियों से चयन की प्रक्रिया अपनानी ही पड़ती है। इस चयन के परिणामस्वरूप न तो पुष्टि और न तो
6. सामाजिक स्थितियों के द्वंद्व या उनका सामना करने से ऐतिहासिकता या वास्तविकता की संरतपना उजागर होती है जिसे किसी की अपनी अस्मिता के पूर्ववर्ती या परवर्ती रूप में समझा जाता है। इस प्रकार सामाजिक क्रियाकलाप इतिहास की निरंतर–है और ये वैयक्तिक हानि से परे भविष्य के प्रति निष्ठावान या दृढ़ संकल्प होते हैं।
7. मानव–अस्मिता ऐतिहासिक स्थितियों से उत्पन्न सामाजिक एवं वैयक्तिक संगतियों या विरोधों में स्वयं विकसित होती है। इन स्थितियों को अनदेखा नहीं किया जा सकता लेकिन किसी भी प्रकार की ऐतिहासिक आवश्यकता इनमें से उत्पन्न नहीं होती।
8. विरोध या असंगतियों की पीड़ा या कठिनाइयों के साथ निजी संबंध होता है। जब एक व्यक्ति सामाजिक स्थितियों की असंगतियों का सामना करता है तो वह उन्हीं समान परिस्थितियों में घिरे रहने वाले समूह के साथ अपनी कठिनाइयों, पीड़ाओं का मोल करता है।
9. सामाजिक असंगति हिंसा का परिणाम है। यह हिंसा स्वयं को उस क्रिया के रूप में प्रदर्शित करती है जिसमें मानव–मात्र या मानव–समूह प्राकृतिक संसार में लिप्त हो जाता है। यह हिंसा उन्हें संरतपों, उद्देश्यों से वंचित करती है या दूर ले जाती है।
10. विभिन्न प्रकार की हिंसा एक प्रकार से दूसरों में सहृदयता के अभाव की अभिव्यक्ति है।

11. कुछ के द्वारा संपूर्ण समाज पर एकाधिकार एक प्रकार की हिंसा है जो पीड़ा और विरोधों का आधार है।

12. विरोध या असंगति उत्पन्न करने वाले हिंसा कारकों में संशोधन करने के द्वारा ही वैयक्तिक तथा सामाजिक पीड़ा को दबाया जा सकता है।

13. संसार (प्राकृतिक एवं सामाजिक) मानवीयकरण के लिए किया गया संघर्ष संचित एवं विकसित होता है जिसके परिणामस्वरूप प्रगति होती है। इस प्रगति में सोद्देश्यता पीड़ा और कठिनाइयों को दूर करती है।

ऊपर बताए गए बिंदु और मूर्त राजनैतिक क्रियाकलापों में उनकी अनुप्रयोगात्मकता अस्तित्वपरक विश्लेषण के उपयोग से उत्पन्न होते हैं जो

वर्तमान समय में केवल यही एक तरीका है जिसे मानव–जीवन के (उसके सामाजिक आयाम में) वर्णन और व्याख्या में पूर्णतः वैज्ञानिक रूप में देखा जा सकता है।

एक वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक वैज्ञानिक पद्धति के समर्थक के रूप में मानवतावाद अहिंसात्मक तरीकों के द्वारा सामाजिक व्यवहार में स्वयं को अभिव्यक्त करता है।

सामान्य संदर्भों में पिछले समस्त घटक वर्तमान समय के सबसे सचेत सिद्धांत हैं (मानववादी, हमारी पार्टी) पार्टी के सिद्धांत हैं।

यह कोई अपिरिचित या अनपहचाना हस्तक्षेप की स्थिति नहीं है बल्कि एक प्रकार का सहसंबंध है जो उन सामान्य संकटों के प्रति प्रतिक्रिया करता है जिन संकटों में हमारा राष्ट्र जी रहा है। भारत को अपने पैरों पर खड़ा करना, उसका रूपांतरण करना है। लेकिन इस रूपांतरण के लिए किसी भी 'तरीके' को नहीं अपनाया।

राजनैतिक कार्यों के आधार

भारत की मानववादी पार्टी स्पष्टतः समर्थन करती है–

–भारतीय संविधान के सिद्धांतों और उद्देश्यों का

–भारत को सर्वोच्च समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने तथा सभी नागरिकों की सुरक्षा करने का

न्याय–सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक

स्वतंत्रता–विचारों, अभिव्यक्ति, आस्था, विश्वास, उपासना की

समानता–अवसर और स्तर की तथा सभी में इन्हें बढ़ावा देना

भाईचारा–प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान तथा राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करनां

दूसरी तरफ हम स्पष्टतः इन बातों को अस्वीकार करते हैं–

मानवीय अधिकारों का हनन, लोकतांत्रिक व्यवस्था के विरतप का 3 शक्ति/ताकत के सोचे–समझे गए व गैरकानूनी इस्तेमाल का, शक्ति के निजी उपयोग का।

कार्य करने के तरीकों के संदर्भ में मानवतावादी पार्टी अपने 'सिद्धांतों का घोषणा–पत्र में जो कुछ भी व्यक्त किया गया है–उसकी समर्थन, पुष्टि करती है। मानवतावादी पार्टी अहिंसात्मक कार्यों द्व ारा निर्देशित है।

पार्टी लोगों की उन कठिनाइयों, पीड़ाओं के प्रति चिंता व्यक्त करती है जो आर्थिक हिंसा से उत्पन्न होती है। इसलिए यह वह प्रत्येक उस सामाजिक संगठन को सशक्त बनाने की आवश्यकता का

ऐलान करती है जो उस प्रभाव को दूर करते हैं। इस प्रकार मानवतावादी पार्टी आर्थिक व अर्थव्यवस्था संबंधी एकाधिपत्य की ओर भी इशारा करती है तथा इन्हें भी उन बहुद्देशीय समूहों के समान आँकती है जो देश में परतंत्रता व असंगति के कारक हैं।

संपत्ति एक ऐतिहासिक संकल्पना (जैसा कि खुद समाज), पार्टी ऐसी गति को रोक, कानून में गतिहीन प्रकृतिवाद को बनाए रखने के खिलाफ़ चेताती है। सामाजिक मानवतावाद टैक्स व्यवस्था में सुधार को बढ़ावा देती है और संयुक्त प्रबंधन का सुझाव देती है जो संपत्ति की स्थिति सुधार धन के प्रगतिशील वितरण को बढ़ावा दे।

आर्थिक शोषण से ही कई भेदभावों का जन्म होता है जो जातिवादी, पीढ़ी के नाम पर हिंसा, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक हिंसा का रूप ले लेता है। पार्टी विशेषकर स्त्री व युवा वर्ग के विरुद्ध हिंसा का मुद्दा उठाती है जो सामाजिक संबंधों में अपनी अधिकाराधीन वस्तुओं के समान समझे जाते हैं।

स्वतंत्र राजनैतिक अभिव्यक्ति के लिए पार्टी विकल्प–सिद्धांत अपनाती है; संयुक्त प्रबंधन के मॉडल की बहुलता एक सहकारी तंत्र के अंतर्गत, कामगारों की एक मंडल में संघात्मक बहुलता, सूची व रेखाओं की विविधता युक्त एकल छात्र केंद्रों द्वारा शासित संयुक्त छात्र सरकार, सभी धर्मों, मान्यताओं के लिए उपदेशों की समानता। संक्षेप में, प्रभुत्ता के आर्थिक, वैचारिक एकाधिपत्य के विरुद्ध संघर्ष ऐसा बिंदु है जो मा.पा. में उसकी उत्पत्ति से ही शामिल है।

ग़रीबी, बेरोजगारी व शोषण को सहकारी तंत्र के माध्यम से समाप्त करना, हर स्तर पर मुफ़्त शिक्षा, सामाजिक औषधि, शस्त्रीकरण के बजट में प्रगतिशील ह्रास, अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द हेतु अन्य देशों के साथ गतिविधियाँ (जो देश स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं), ये मा.पा. की प्राथमिकताएँ हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर, पार्टी एशिया के साथ इन बिंदुओं को बढ़ावा देती है–

(1) विवादों को हल करने हेतु देशों (संबंधित) के साथ शांति संधियाँ; विशेष/विशिष्ट समस्याओं पर बातचीत (सामान्यतः) जारी रखना।

(2) एशियाई देशों की समिति द्वारा निरीक्षित के अंतर्गत आने वाले देशों का त्वरित व आनुपातिक निःशस्त्रीकरण।

(3) सीमा अवरोधों की समाप्ति व विशिष्ट व विशिष्ट सहायक संधियों के माध्यम से आर्थिक एकीकरण।

(4) एशिया उभयनिष्ठ मंडी की स्थापना हेतु स्पष्ट व निर्णित वार्तालाप और एशियाई देशों के प्रतिनिधियों युक्त राजनैतिक दलों से निर्मित संसद।

(5) विशिष्ट निष्ठा आधारित तकनीकी विकास हेतु सहयोग।

(6) एशियाई ट्रिब्यूनल की विशेषताओं युक्त मानवाधिकारों का स्थायी आयोग जो लोगों की स्वतंत्रता व जीवन के विरुद्ध कार्य करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करें व निर्णय ले।

हमारी मानवतावाद के विषय में

मानवतावाद सामाजिक गतिविधियों का केंद्र किसी राष्ट्र, राज्य तंत्र, यहाँ तक कि भगवान को भी नहीं बल्कि मनुष्य को मानता है।

मानवतावाद स्वतंत्रता के रूप में मनुष्य का चरित्रण करके उसे स्वतंत्रता के निषेध की स्थिति में पाता है। प्रकृति का निषेध जो अपने संकल्पों के साथ उस पर हावी रहता है और जिसके विरुद्ध संघर्ष करके वह वैज्ञानिक प्रगति की ओर बढ़ता है। और ऐतिहासिक व सामाजिक प्रकृतिवाद का निषेध जिसके विरुद्ध संघर्ष करके वह सामाजिक प्रगति की ओर अग्रसर होता है।

मनुष्य एक प्रदत्त स्थिति में जन्म लेता है, यहाँ पूरे समाज पर एक भाग का अधिकार है, इसी

भाग का अधिकार उत्पादन के साधनों पर भी है, ऐसी स्थिति के लिए राज्य की मशीनरी ज़िम्मेदार है। अतः राज्य–जिसे समाज की प्रकृति कहा जाता है, हनन व शोषण के केन्द्रीयकरण, वर्धन, संरक्षण का केंद्र है।

वर्तमान में शोषण का वर्धन पूँजीवादी राज्यों के विकल्प के रूप में पूँजीवादी साम्राज्य को तथा समाजवादी राज्यों के विकल्प के रूप में समाजवादी साम्राज्य को जन्म दे रहा है।

जहाँ तक उत्पादन के साधनों से निजी अधिपत्य को हटाने की बात है, मानवतावाद समाजवादी है।

जहाँ तक एकाधिपत्य व नौकरशाही के पंजों में फंसे राज्य के विकेन्द्रीयकरण का सवाल है, यह उदारवादी है।

जब बात वर्ग की आर्थिक स्थितियों को परिवर्तित व तोड़ने की आती है, यह क्रांतिकारी है।

मानवतावाद नैतिक व कार्य–प्रणाली दोनों ही रूपों में अहिंसक है। यह जनमत–संग्रह में विश्वास रखने वाला, लोकतांत्रिक, बहुलतावादी, सहकारी व स्व–प्रबंधक है।

मा. पा. के पाँच मूलभूत बिंदु

(1) सक्रिय अहिंसा

मा. पा. हिंसा से लड़ने के लिए स्वयं को अहिंसक कार्य द्वारा शासित करती है (पृष्ठभूमि में परिवर्तन) (देखें टिप्पणी 2, 3)

(2) मानवमात्र–केन्द्रीय मूल्य

मा. पा. मानवमात्र को केन्द्रीय मूल्य मानती है, कहती है–"मनुष्य से बढ़कर कुछ नहीं व एक मनुष्य अन्य से निम्नतर नहीं।" अतः वे जो मनुष्य से अधिक अन्य शक्ति को मानें, मानवतावाद के विषय में बोल नहीं सकते। (देखें टिप्पणी–7)

(3) सहकारितापरक तंत्र

आर्थिक मामलों में मा.पा. स्वयं को सहकारितापरक मानती है जो सामाजिक संगठन के इस रूप को राजनैतिक श्रेणी में ले जाने का लक्ष्य रखती है, नौकरशाही, राष्ट्रवाद व एकाधिपत्य से स्वतंत्र होकर। (देखें टिप्पणी–5)

(4) अभेदभाव

यह हमारा (मा. पा.) पारिभाषिक बिंदु है। हमारे लिए, केवल मनुष्यों का अस्तित्व है, लिंग, जाति, राष्ट्रीयता, धर्म के भेद महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। (देखें टिप्पणी–6)

(5) विकल्प व अन–एकाधिपत्य का सिद्धांत–

मा. पा. स्वतंत्रता की एक मूर्त राजनैतिक अभिव्यक्ति के रूप में विकल्प को प्रभावपूर्ण व महत्त्वपूर्ण स्थान देती है। साथ ही वह हर प्रकार के एकाधिपत्य–चाहे आर्थिक हो, संगठनात्मक या वैचारिक–को समाप्त करने के लिए संघर्षरत है। हर प्रकार एकाधिपत्य में कुछ हिस्से द्वारा संपूर्ण इकाई पर स्वायत्तीकरण होता है। इसके अतिरिक्त, जहाँ एकाधिपत्य हो, वहाँ स्वतंत्रता नहीं होती। (देखें टिप्पणी–7)

जहाँ तक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों का सवाल है, भारत की मा.पा. एशिया में एकीकरण व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे लोगों को बढ़ावा व सहयोग देने संबंधी बिंदुओं को रखती है।

ये मुख्य पाँच बिंदु 'सिद्धांतों का घोषणा–पत्र' और 'राजनैतिक कार्य के आधार' में से संक्षिप्त रूप में लिए गए हैं। ये बिंदु एक प्रकार से राजनैतिक वास्तविकता के विशिष्ट आयामों तथा मत बनाने के लिए संदर्भ बिंदु का कार्य करते हैं।

परंपरागत राजनीति, राजनेता व पार्टियाँ–

भ्रष्ट–मिथकीय–निरंकुश–परिवर्तित–मंद–असंगत–उपेक्षनीय–ग़ैर–जिम्मेदार–अनैतिक–वैचारिक रूप से बंजर–विभाजित–अयोग्य–तानाशाह–तदर्थवादी–अपर्याप्त–संप्रदाय संबंधी–रूढ़िवादी–हठधर्मी–स्व–केंद्रित– संगठनात्मक तौर पर उत्पाती–अलोकतांत्रिक–खिन्न–असंव्यावसायिक–संकीर्ण– बुद्धि–पाखंडी–सत्ता के दलाल–अपमाननीय–दिखावा प्रधान–संप्रदायवादी–तुच्छ–जातिवादी–हिंसक–असहिष्णु–अनोत्तरदायी–चुनाव–प्रधान– समझौता प्रधान–भेदकारी–धन–संग्रहण करने वाले–प्रभुत्ववादी–वायदों से मुकरने वाले, और क्या नहीं।

यदि आप नहीं जानते कि हम ऐसा क्यों मानते हैं, आप इन पर विचार कर हमसे सहमत हो सकते हैं, तब आपको मा. पा. पसंद आएगी क्योंकि यह इन सबके ख़िलाफ़ है।

–क्या वास्तव में आप कुछ नवीन चाहते हैं? तो भारत के मानवीयकरण के लिए मा. पा. से हाथ मिलाएँ (देखें नोट 8)

(नई राजनीति बनाने की प्रणाली की रूपरेखा) (या राजनीति को कैसा होना चाहिए)–

नैतिक–सैद्धांतिक–सहभागी–प्रतिनिधि–दीर्घ–काल के लिए नियोजित–संगत–उत्तरदायी–एकीकृत– अभेदकारी–सलाहकार–अद्यतन–निःस्वार्थ भविष्वादी–अहिंसक–नियमित–संगठनात्मक रूप से मज़बूत–लोकतांत्रिक–राष्ट्रीय–भवदीय–जवाबदेह–यथार्थ–आत्मालोचक–मुक्त बुद्धि–सहकारी–सौहार्दपूर्ण–सतत् कार्य प्रधान–संव्यावसायिक–पर्याप्त–शुद्ध–अहठधर्मी–ईमानदार–अक्षेत्रवादी–समझौता न करने वाले–आनंदपूर्ण– प्रभावी–संचार करने वाले–युवा–कल्पनाशील–नवीन–जनता–प्रधान व बहुत कुछ।

हम इसी विचार से मा. पा. बना रहे हैं! (देखें टिप्पणी–9)

केवल मानवतावादी पार्टी ही क्यों? (अन्य क्यों नहीं)

- एक सशक्त मगर पथ भ्रष्ट दल में सम्मिलित होने से बेहतर है एक उदीयमान परन्तु पथ की ओर अग्रसर होती पार्टी को चुनना। क्या एक बूढ़े, घुमावदार बरगद को चाहकर भी सीधा किया जा सकता है?

  आपके गंतव्य तक पहुँचाने वाली ट्रेन को छोड़ क्या आप ऐसी ट्रेन को चुनना पसंद करेंगे जो सुविधाएँ तो जुटाती है पर आपको गंतव्य से कहीं दूर ले जाती है?
- क्योंकि मा. पा. ऐसी पार्टी है जिसका दामन इतिहास की किसी भी प्रकार की हिंसा तथा भ्रष्टाचार से बेदाग़ है।
- क्योंकि तुच्छ व किसी क्षेत्र विशेष के हितों से दूर मा. पा. मानवाधिकारियों व हितों में विश्वास रखती है।
- क्योंकि मा. पा. में उन सदस्यों को सम्मान मिलता है जो औरों के हित के लिए प्रयत्नशील है ना कि वे जो भ्रष्ट, हिंसक एवं स्वार्थी हैं।
- क्योंकि मा. पा. में सम्मिलित होने का कारण है इसका वर्तमान स्वरूप तथा वह स्वरूप जो कि भविष्य में हो सकता है तो ऐसी पार्टी क्यों चुनें जो वह बनने का दिखावा करती है जो वह कभी बन ही नहीं सकती?

- क्योंकि मा. पा. उन दलों में से नहीं जो प्रतिदिन नए तथा अनंत विशेषाधिकारों, विवादों, भ्रष्ट विचारों को भोजन के समान परोसते हैं अपितु उनमें से है जो निःस्वार्थ, व्यावहारिक व सत्यता परिपूर्ण आदर्श जनता के समक्ष रखते हैं।
- संक्षेप में कहा जाए तो मा. पा. एक बेहतरीन, नवीनतम अवसर प्रदान करती है जबकि अन्य दल या तो नाक़ामयाब हो चुके हैं या अपने पतन की ओर निरंतर अग्रसर हैं।
- क्योंकि अन्य कोई भी दल आदर्शों, प्रबंधन, उद्देश्यों तथा बेहतरीन संचालन का अद्वितीय मेल प्रस्तुत नहीं करता।
- क्योंकि बेहतर है एक ऐसी पार्टी चुनना जो रूढ़िवादी परंपराओं से दूर एक नया, एक ऐसा प्रारूप व स्वरूप देती है जो एक दिन हर पार्टी का होगा।
- क्योंकि मा. पा. के कार्यालय का उसूल वरिष्ठता के आधार पर ही तरक्की देना नहीं बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों का आदर करना है। केवल इसी दल में व्यवस्थित चुनावों के आधार पर अधिकारियों का चुनाव होता है तथा योग्यतानुसार उन्हें कार्यभार सौंपा जाता है।
- क्योंकि दूसरे दलों की तरह मा. पा. झूठे, अवसरवादी, द्विअर्थी टिप्पणियों, समझौतों व वादों में विश्वास नहीं रखती अपितु दिए गए वचनों को पूरा करने का अथक प्रयास करती है।
- क्योंकि दूसरी पार्टियों के या तो आदर्श नहीं हैं और यदि हैं तो इसे लेकर उनके सदस्य सदैव असमंजस की स्थिति में रहते हैं अतः उनकी कथनी व करनी में बड़ा अंतर होता है।
- केवल मा. पा. ही अहिंसा को अपनी कार्य–प्रणाली व आदर्शों का (सशक्त) स्तंभ बनाती है।
- क्योंकि अन्य सभी दल अव्यावहारिक व रूढ़िवादी आदर्शों के बूते आर्थिक विकास का दावा करते हैं। (पूँजीवादी, साम्यवादी, गाँधीवादी, समाजवादी आदि)
- क्योंकि मा. पा. ऐसी एकमात्र पार्टी है जो समाज व व्यक्ति दोनों में एक साथ परिवर्तन का प्रस्ताव देती है। जबकि अन्य पार्टी हिंसा के माध्यम से समाज को स्वर्ग बनाने के झूठे दावे करती हैं, बिना कोई व्यक्तिगत व सामाजिक बदलाव के।
- क्योंकि केवल मा. पा. ही है जो साधन को साध्य से अहम मानती है, इस पार्टी के लिए साध्य ही सब कुछ नहीं है।
- क्योंकि अन्य दल राष्ट्रवाद की विकृत विचारधारा, पहचान, धार्मिक धरोहर, प्रगति आदि को मनुष्य से बड़ा दर्जा देते हैं जबकि मा. पा. के लिए "मनुष्य से बढ़कर कुछ नहीं तथा एक मनुष्य दूसरे से निम्नतर नहीं"।

राजनैतिक परिपेक्ष में हमारा वर्गीकरण हम उस लेबल से बचने की कोशिश करते हैं जो अर्थ को उलझा दे। वामपंथी (लेफ़्ट), "राइट", "समाजवाद", "मार्क्सवाद" इन शब्दों का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न है, ये सिद्धांतों में कुछ और व व्यवहार में कुछ और अर्थ रखकर विरोधाभास की स्थिति खड़ी करते हैं। इसलिए हम किसी रूढ़िवादी विचारधारा में स्वयं को वर्गीकृत नहीं करते।

हालांकि लोगों के पूछने पर हम (कार्य–प्रणाली के अनुसार) स्वयं को अहिंसक, लोकतांत्रिक, सहभागी, सहकारी, अभेदकारी, एकाधिपत्य के विरोधी, जनमत–संग्रह समर्थक, सलाकार, उदारवादी जैसे शब्दों से परिभाषित करते हैं।

संक्षेप में, हम कुछ अलग व नये हैं : हम मानवतावादी हैं।

हमारा प्रतीक

यह एक अनंत सतह का रिबन है जो अनंतता का प्रतीक है। क्योंकि यह एकमात्र चिह्न या

आकृति है जो मानव के सही रूप, क्षमता व भविष्य व्यक्त करती है।

नारंगी रंग का अर्थ है–"ना मानव से उच्च कुछ है तथा ना एक मानव अन्य से निम्नतर है।"

स्पष्टीकरण हेतु साहित्य

- "मानववादी आवाज़" मासिक पार्टी (कार्यकर्ताओं के साथ तथा के माध्यम से उपलब्ध)
- मानवतावादी पार्टी की "विचारधारा"
- मानवतावादी पार्टी की "कार्य–प्रणाली"
- मानवतावादी सरकार के लिए प्रारूप कार्यक्रम
- राजनैतिक सम्मेलन (सचिवों के लिए)
- हमारे सदस्यों के विभिन्न योगदान

परिशिष्ट

मानवतावादी पार्टी से जुड़े कुछ सवाल और जबाव

- राजनीतिक परिदृश्य में मानवतावादी पार्टी का क्या स्थान है?

  मा. पा. एक उदीयमान पार्टी है। अतः यह कहना अभी जल्दबाज़ी भी होगी और मनमानी भी कि राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में इस पार्टी का क्या स्थान है मगर यह कहा जा सकता है कि हम एक राष्ट्रीय, मार्क्सवाद के विरोधी दल का हिस्सा है, हम मानवतावादी तथा सहकारितावादी हैं।

- मानवतावाद व मार्क्सवाद में क्या अंतर है?

  सबसे बड़ा अंतर यह है कि मानवतावाद राज्य को नहीं मानवता को सबसे अहम स्थान देता है। मार्क्सवाद के अनुसार मनुष्य का व्यवहार उन "विषयपरक स्थितियों" का परिचायक है जिन्हें बदलकर ही समाज में बदलाव आ सकते हैं

  जबकि मानवतावाद ही मनुष्य की इच्छा व प्रवृति को समझता है और मानता है कि जरूरी बदलाव व क्रान्ति के लिए ये आवयश्क हैं।

  मार्क्सवाद के अनुसार केवल आर्थिक ढाँचे में बदलाव लाकर एक बेहतर मनुष्य की कल्पना संभव है जबकि मानवतावाद बेहतर मनुष्य के साथ ही बेहतर समाज को उपर्युक्त बदलाव के लिए ज़रूरी मानता है।

  मार्क्सवाद का विश्वास है कि वर्ग–संघर्ष ख़त्म करने का एकमात्र उपाय है–मज़दूर वर्ग की तानाशाही। परंतु सच यह है कि इससे पूर्णतः राज्य के हाथ में शासन चला जाता है और फिर से एक शासक वर्ग का जन्म होता है। मानवतावाद के अनुसार मनुष्य हर प्रकार की शारीरिक–मानसिक के अनुसार मनुष्य हर प्रकार की शारीरिक–मानसिक यातनाओं से बचने व दूर रहने के लिए जो कदम उठाता है उन्हीं में सभी मनुष्यों की स्वतंत्रता व विश्व का हित छिपा है।

  आख़िरकार, मार्क्सवाद भी अन्य हिंसक दलों की भाँति किसी न किसी रूप में हिंसा को अपना हथियार मानता है परंतु मानवतावाद पूरी तरह अहंसा को अपनी कार्य–प्रणाली

बनाकर उसी पर कायम रहता है।

- क्या मा. पा. पूँजीवाद के अधीन सहयोगवाद की अनुयायी है?

  नहीं, मा. पा. केवल सहयोगवाद की अनुयायी है। मा. पा. पूँजीवाद या संप्रदायवाद दोनों को ही नकारती है।

- सहयोगवाद किन मायनों में पूँजीवाद और संप्रदायवाद से अलग है?

  सबसे बड़ा फ़र्क है–आम लोगों की सहभागिता।

  पूँजीवाद समर्थक देशों में सहकारिता के नाम पर कुछ निजी कंपनियाँ वहाँ राज कर रही हैं जबकि समाजवादी देशों में सहभागिता व सहभागी नौकरशाह हैं। "एक व्यक्ति, एक मत" का पालन करने की बजाय यह एक प्रशासनिक समिति बन गई है जो हर निर्णय लेने का अधिकार रखती है।

  समाजवाद को तो परिवर्तित कर बेहतर बनाया जा सकता है पर पूँजीवाद के साथ ऐसा नहीं है।

  समाजवाद को बेहतर बनाने का उपाय है ऐसे सहकारियों को सम्मिलित करना जो एक विकेंद्रित आर्थिक इकाई बन सकें।

- तो अन्य कोई समाजवादी दल क्यों न चुनें?

  इसके पक्ष (कारण) है– आदर्शवादी व व्यावहारिक।

  जहाँ तक आदर्शवाद की बात है, हम मूलतः मानवतावादी हैं, समाजवादी हैं। समाजवाद के बिगड़े स्वरूप में मनुष्य से अहम राज्य है।

  और व्यावहारिक प़ा को देखा जाए तो हमारी कार्य–प्रणाली में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

- भारत में उदीयमान मा. पा. का अन्य देशों की मा. पा. के बीच क्या संबंध?

  भारत की मा. पा. तथा अन्य देशों की मा. पा. का उदय विचारों की एक ही धारा का परिणाम है–

  मानवतावादी आदर्शवाद।

  इन पाँच बिंदुओं (मूल विचारों) पर ये सभी पार्टियाँ सहमत हैं–मनुष्य (मानवता) की अहमियत; सहयोगवाद को तंत्र बनाने की क़वायद; भेदभाव में अविश्वास; एकाधिपत्य में अविश्वास; सत्य स्वतंत्रता के लिए विकल्प का सिद्धांत तथा हिंसा से लड़ने के लिए अहिंसा का हथियार अपनाना।

  एशिया में, प्रादेशिक स्तर पर हम सभी एक समान मोर्चे के पक्ष में हैं जो बहुदेशीय शक्तियों, महाशक्तियों व निगमों की अवांछित गतिविधियों के विरुद्ध हो।

  ऊपर बताए गए बिंदु व्यापक संदर्भ के लिए हैं।

  प्रत्येक देश के अपने विशिष्ट मुद्दों के बारे में प्रत्येक पार्टी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेती हैं।

- मा. पा. का चिह्न किसका परिचायक है?

  पार्श्व भाग में दिखने वाला संतरी/नारंगी रंग रुचियों की घनिष्ठता का प्रतीक है। काले बोर्डर से सजा सफेद रिबन मोबियस के रिबन का नया रूप है। वे एक महान गणितज्ञ थे, साथ ही वे किसी भी स्थान का प्राकृतिक वर्णन करने में भी महारत रखते थे। उन्होंने एक

ऐसे रिबन का आविष्कार किया जिसे एक बार घुमाकर यदि इसके सिरों से जोड़ा जाए तो केवल एक ही सतह नज़र आती है। इसका यह अर्थ निकलता है कि एक ही सतह पर लगातार कई लकीरें खींची जा सकती हैं पर फिर भी इसके सिरों को छेड़ना ज़रूरी नहीं। ये अबाधित रूप से परस्पर जुड़े हैं।

यह रिबन अनंतता का त्रिसंरचनात्मक प्रतीक है जैसा कि गणित व तर्कशास्त्र में होता है। यह अनंतता का प्रतीक अर्थात् रिबन के सिरे हमारा रचनात्मक व विस्तृत दृष्टिकोण दर्शाता है। अतः व्यक्तिगत व सामाजिक परिवर्तन परस्पर निर्भर हैं। ये दोनों ही एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं; बाह्य सक्रियतावाद (सामाजिक) तथा आंतरिक (व्यक्तिगत) स्पष्टीकरण आदि। इन दोनों में ही लेन–देन के संबंध है और इसीलिए ये परस्पर जुड़े हैं।

पर संक्षेप में, हम कहते हैं कि हमारा चिह्न मनुष्य को भविष्य में संभव प्रगति के लिए संभावनाओं की अनंतता के रूप में अपनाता है।

- अहिंसा (सक्रिय) कार्य–प्रणाली क्यों?

मा. पा. के अनुसार अहिंसा को अपनाना अवसरवाद नहीं है बल्कि यह नीतिशास्त्र का हिस्सा है।

हमारा मुख्य आदर्श, मूल्य मनुष्य–जीवन है। जैसा कि नीतिशास्त्र मानता हैं कि साधन जिसके कारण क्रांति संभव है, उसे उद्देश्यों से जुड़ना चाहिए, यह साधन है–मनुष्य।

प्रागैतिहासिक अर्थात् छड़ी के युग को छोड़ हम अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर, अपनी कल्पना–शक्ति की सहायता से मनुष्य के सत्य इतिहास में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं।

जबकि हिंसा सदैव समस्याओं को हल करने की बजाय उन्हें उस स्तर तक बढ़ाती आई है जहाँ ये व्यक्तिगत संबंधों के साथ–साथ अन्तर्देशीय संबंधों को भी बिगाड़ देती हैं।

- क्या हिंसा मनुष्य में निहित नहीं है?

बिल्कुल नहीं। हिंसा एक ऐसी आदत है जिसे व्यक्ति सामाजिक परिवेश से ही ग्रहण करता है। मा. पा. सामाजिक तथा व्यक्तिगत दोनों ही पक्षों में सुधार लाने का पक्षधर है। इसीलिए हम सक्रिय अहिंसा को अपनी कार्य–प्रणाली का हिस्सा मानते हैं। हम इसी के बूते समाज सुधार की आशा रखते हैं।

- मा. पा. के अनुसार 'स्वतंत्रता' क्या है?

मनुष्य की उपलब्धियों पर यदि नज़र डालें तो ये कम नहीं पर यदि इन सबको एक बिंदु में समेटा जाए तो हम पाएँगे कि मानव जाति की सबसे बड़ी उपलब्धि है–स्वतंत्रता की प्राप्ति।

राजनैतिक पक्ष से स्वतंत्रता का अर्थ है–विकल्पों की उपलब्धता! ये विकल्प उसे बाध्यताओं से बचाते हैं। इसीलिए विकल्पों का सिद्धांतों हमारा मूलभूत सिद्धांत है।

मा. पा. स्वतंत्रता के विरुद्ध एकाधिपत्य में विश्वास नहीं रखती। एकाधिपत्य आम जनता से कई साधन व सुविधाएँ जैसे संचार, उत्पादन के अधिकार छीन लेता है। जहाँ भी राजनैतिक, आर्थिक या अन्य कोई भी एकाधिपत्य है, वहाँ स्वतंत्रता संभव नहीं है।

- मा. पा. के अनुसार भागीदारी का क्या अर्थ है?

मा. पा. मानती है कि भागीदारी का अर्थ है–निर्णय लेने में भागीदारी। समस्याएँ आम जनता से जुड़ी है और इसीलिए जनता ही इनका सही हल ढूँढ सकती हैं

जनता की सही सहभागिता के लिए प्रत्यक्ष लोकतंत्र होना चाहिए जो जनमत–संग्रह, आनुपातिक जनमत–संग्रह, निषेधाकिार आदि से संभव है। इसीलिए मा. पा. लोकतंत्र की पक्षधर है, इसी से जनता मूलभूत विषयों पर निर्णयों में भागीदारी दे सकती है। इसी स्थिति में हम सच्चे व वास्तविक भागीदारी व विकल्प की कल्पना कर सकते हैं।

वर्तमान में भागीदारी औपचारिक है क्योंकि उपुर्यक्त में से कोई भी क्रियाविधि वास्तव में अपनाई नहीं जा रही और निर्णय कुछ हाथों में ही सिमटकर रह गए हैं।

वर्तमान में, भागीदारी केवल राज्य, राष्ट्रीय व नगरपालिका चुनावों में मतदान तक सीमित है। इसके अलावा, केवल रैली निकालने व नारे लगाने के लिए जनता आगे आती है और वह भी किसी पार्टी के प्रचार के लिए। अतः निर्णय लेने में ख़ासतोर पर जिनसे भेदभाव होता है, वे हैं–महिलाएँ, युवा व कामगार वर्ग।

- आप ऐसा क्यों कहते हैं कि मा. पा.–"पार्टी से कुछ अधिक है"?

मा. पा. नई है, इसके पास सत्ता भी नहीं है पर बावजूद इसके, यह कई पारंपरिक पार्टियों से कई मायनों में आगे है।

शुरुआत के लिए, अवसरवादी, रूढ़िवादी पार्टी, जैसे–पूँजीवादी, समाजवादी आदि से कहीं बेहतर व सहनशील आदर्शवाद का पालन करती है। यह पार्टी कामगार, युवा व महिला वर्ग से कोई भेदभाव नहीं रखती। इस पार्टी का आधार मानव के ऐच्छिक प्रयास हैं। पार्टी के निर्णय व संचालन में एक व्यक्ति की अधिकाधिक सहभागिता उसके द्वारा पार्टी के लिए किए गए काम पर निर्भर करती है।

मा. पा. सही मायनों में लोकतांत्रिक है। पार्टी में प्राधिकरण में नयापन लाने हेतु साल में एक बार आंतरिक चुनाव होते हैं। यह पार्टी के कुछ गिने–चुने प्रतिनिधियों द्वारा नहीं बल्कि सभी सदस्यों के प्रत्यक्ष मतदान से होता है।

सबसे अहम बात है कि पार्टी व्यक्तिगत व सामाजिक रूपांतरण दोनों पर एक साथ विचार करती है।

- क्या मा. पा. तकनीकी, कंप्यूअर आदि के खिलाफ़ है?

नहीं, हमारा विश्वास है कि तकनीकी मनुष्य की क्षमताओं, संभावनाओं को बढ़ाती है, कई भौतिक समस्याओं को हल करती है। शिक्षा, औषध विज्ञान, संचार, सूचना आदि में तकनीकी का बड़ा योगदान है।

तकनीकी को जिस फल की इच्छा से मनुष्य प्रयोग करता है, वही फल वह इससे पाता है पर ग़लत यह है कि मनुष्य उसे कई बार सारे निर्णय लेने का हक़ दे देता है, मा. पा. इसीके विरुद्ध है।

तकनीकी जहाँ स्वतंत्रता का उद्देश्य पूरा करती है, वहीं वह प्रयोग करने वाले की इच्छानुसार उत्पीड़न का कारण भी बनती है। बेशक़, मा. पा. ऐसी तकनीकी की पक्षधर है जो मानवता को नहीं भूलती। इसे मुख्य तौर पर जनहित में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि लोग कुपोषण, बीमारियों, ग़रीबी, अशिक्षा आदि से स्वतंत्र हों नाकि केवल नौकरशाहों की सेवा में ही इसका प्रयोग होना चाहिए।

यही है, एक मानवतावादी तकनीकी।

एक मानवतावादी सरकार के लिए प्रारूप कार्यक्रम–

ऐसे ही कुछ प्रस्ताव यहाँ प्रस्तुत हैं जिन्हें मा. पा. ध्यान में रख, अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर

है। इन्हें एक प्रयोगात्मक रूपरेखा व निर्देश कहना बेहतर है बजाय एक निर्णायक कार्यक्रम कहने के। यह एक निर्णायक कार्यक्रम तभी कहा जाएगा जब इसे मा. पा. की राष्ट्रीय कांग्रेस से सहमति मिल जाएगी। एक बढ़िया कार्यक्रम इसके निर्माताओं के दृष्टिकोण, समाज की स्थिति को दर्शाता है (उस समय जब इसे बनाया गया।)

इसीलिए मा. पा. नियमित, ब्लूप्रिंट को नकारती है जो व्यक्तिगत–सामाजिक विकास का दम घ ोंटती हैं।

मा. पा. किसी सूत्र में विश्वास न रखकर मानवता के हित के लिए ऐसे कार्यक्रम की पक्षधर है जो आगे संशोधन, सृजनात्मकता, परिवर्तन की गुंजाइश रखें ताकि जनता की स्वीकृति मिले न कि यह उन्हें बाध्य करे। आशा है कि हमारे सदस्य इसकी (प्रारूप) कमियों को दूर कर इसकी बेहतरी के लिए क़दम उठाएँगे।

युवा वर्ग

वृद्ध पीढ़ी का संगठनात्मक व सामाजिक निर्णयों पर एकाधिकार स्थापित है, इसे मा. पा. ग़लत ठहराती है।

मा. पा. स्वीकार करती है कि युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी ज़रूरी है उन सामाजिक–व्यक्तिगत स्थितियों में बदलाव लाने के लिए जो युवाओं पर थोपी गई हैं पर यह भी आवश्यक है कि वे संदेह, हाशिये व उपद्रव के शिकार न हों।

- ऐसे हर व्यवस्थापन को तोड़ना जो युवाओं की भागीदारी को बाधित करता है।
- किसी निर्णायक व निर्देशक पद के लिए युवाओं का एकीकरण उन्हीं स्थितियों में जो किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए भी (के समक्ष) प्रस्तुत है।
- युवा कामगार वर्ग जो शिक्षार्थी या प्रशिक्षणार्थी है के लिए काम करने के घंटों में कमी पर आय में नहीं।
- राज्य की साख, प्रत्यय पर युवाओं की भवन–निर्माण, उत्पादन, सेवाओं आदि में शिरक़त।
- श्रम, सांस्कृतिक, राजनैतिक अनुसंधान व व्यक्तिगत विनिमय के आधार पर छात्रवृत्तियों द्वारा राष्ट्रीय व एशियाई युवाओं का एकीकरण।
- युवा विषयों के लिए मंत्रालय।
- 18 वर्ष की आयु में मताधिकार।

कामगार वर्ग

मानवतावादी श्रम नीति का रुझान ऐसे समाज की रचना की ओर है जिसका आधार जनहित व सहयोग है। ऐसे कुछ महत्त्वपूर्ण क़दम हैं–

- मुद्रास्फीति के आधार (स्तर) पर आय में वृद्धि।
- बेरोज़गारी बीमा।
- विभिन्न भवन–निर्माण, स्वास्थ्य व शैक्षिक प्रोजेक्ट्स में श्रमिक वर्ग की भागीदारी।
- अल्पसंख्यकों की भागीदारी के साथ।
- कामगारों का राष्ट्रीय संगठन।
- कार्यस्थलों में चुनाव व सम्मेलन।

- स्थायी श्रम प्रशिक्षण।
- सामाजिक–सांस्कृतिक सुविधाओं के साथ व्यापार संघों का मुफ़्त संगठन।

महिलाएँ

कानूनी, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक स्तर पर महिलाओं के साथ भेदभाव होता आया है। इस स्थिति से बाहर लाने के लिए मा. पा. यह क़दम उठाएगी ताकि निर्देशक, निर्णायक व चिंतन योग्य पदों में उनकी भागीदारी को बढ़ावा मिले–

- किसी भी नागरिक–स्थिति में प्रसव संबंधी सहयोग।
- महिलाओं की प्रतिभागिता को कम करने वाले हर व्यवस्थापन, पेनल को रोका/तोड़ा जाए।
- समान कार्य, समान वेतन।
- कानून व डी पैक्टो में विवाह की कानूनन समानता।
- महिला संबंधी विषयों के लिए नया मंत्रालय।

राज्य

मानवतावादी अवधारणा राज्य के विकेंद्रित रूप में विश्वास रखती है व मनुष्य को राज्य से बड़ा दर्जा देती है। मानवतावाद समाज के परिवर्तनहीन स्वरूप, जैसे–उदारवाद के ख़िलाफ़ चेताती है जो पूँजीवादी साम्राज्यवाद व समाजवादी साम्राज्यवाद से कुछ अधिक भिन्न नहीं।

अतः इतिहास की गतिशील अवधारणा को ध्यान में रखते हुए यह पार्टी (मा. पा.) राज्य के स्वरूप को बेहतर बनाने के लिए जनता की भागीदारी की पक्षधर है। राज्य के स्वरूप में परिवर्तन लाने हेतु मा. पा. के प्रस्ताव हैं–

- जनमत, निषेधाधिकार ;च्ंचनसंत टमजवद्ध के माध्यम से संविधान में आवश्यक सुधार लाकर प्रत्यक्ष लोकतंत्र की ओर बढ़ना।
- जनसंचार माध्यम में सरकार की दख़ल अंदाज़ी कम करना व उसका एकाधिकार ख़त्म करना।
- राज्य को इनका प्रभारी होना चाहिए–
  - (1) मूल उद्योगों का विकास
  - (2) आर्थिक तौर पर देश को समृद्ध करने के लिए उद्यम व उद्यमजीवियों के ताल–मेल का प्रबंधन
  - (3) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का विकेन्द्रीकरण

राज्य व राजनैतिक दल

राज्य का कार्य होगा–

(1) सभी संगठनों की स्वतंत्रता व सभी राजनैतिक क्षेत्रकों को बिना भेदभाव अभिव्यक्ति का अधिकार।

(2) सभी राजनैतिक दलों को अपने विकास व जनसूचना के लिए पर्याप्त संसाधन मुहैया करना।

(3) राजनैतिक दलों के माध्यम से लौकिक स्पष्टीकरण बढ़ाना।

(4) कुछ दलों के संगठनात्मक एकाधिपत्य को ख़त्म करने के लिए, उन्हें आर्थिक रूप से

जवाबदेह बनाने के लिए दलों के नियमों, कानूनों में सुधार लाना।

राज्य व धर्म

राज्य धार्मिक मामलों में सभी को अभिव्यक्ति का हक़ देगा तथा नास्तिकता के लिए भी लोग आज़ाद रहेंगे; राज्य इनसे दूर रहेगा।

राज्य व सुरक्षा (रक्षा)

- युद्ध–सामग्री के लिए समझौते तथा अन्य देशों के निरीक्षण (युद्ध–सामग्री) में आनुपतिक ह्रास।
- रक्षा विषयों में गठबंधन नहीं।
- परमाणु हथियार के उत्पादन एवं प्रयोग पर जनमत–संग्रह।
- विश्व में आनुपातिक व प्रगतिशील शस्त्रापहरण।
- महाशक्तियों व अन्य देशों द्वारा साइन किए गए अंतरिक्ष शस्त्रों के विरुद्ध संधि तथा बाह्य अंतरिक्ष ;वनजमत`चंबमद्ध के संग्रामिक प्रयोग पर रोक (राष्ट्र संघ) द्वारा।
- परमाणु युद्धों से मानव जाति को होने वाले नुकसान को देखते हुए, इन्हें सार्वजनिक भर्त्सना देना।
- सभी कूटनीतियों का शालीनता से प्रयोग कर शस्त्रापहरण, शांति के लिए आवश्यक परस्पर विश्वास के माध्यम से एशियाई देशों में सहयोग व सौहार्द बढ़ाना।

संस्कृति

मा. पा. जानती है कि यदि शिक्षा जन सूचना व प्रगति के लिए ज़रूरी है तो संस्कृति अभिव्यक्ति व स्वतंत्रता का माहौल देती है। इसलिए पार्टी एक नया सांस्कृतिक ढाँचा प्रस्तुत करती है जो यद्यपि परिपूरक है, शैक्षिक ढाँचे से स्पष्टतः अलग है।

भारतीय संस्कृति का पुनर्जन्म व प्रगति उस विवाद को बढ़ाने से शुरू होगी जो उस विषय पर हो जहाँ यह जाना जा सके कि जनता किस जीवन व समाज की इच्छा रखते हैं क्योंकि ऐसे समाज के निर्माण से संस्कृति का विकास संभव है।

और इस संदर्भ में, पुराने, हिंसक, शून्यवादी संस्कृति पर चर्चा आवश्यक है। प्राचीन भारत के ग्राह्य रिवाज, उनका योगदान भी चर्चित हो ताकि भविष्य में संस्कृति को अधिक मानवीय बनाया जा सके।

टी. वी. धारावाहिकों व फ़िल्मों से थोड़ा–बहुत सीखकर थोड़े–से सुधार लाने से कुछ नहीं होगा। आज हमें ज़रूरत है नए, संपूर्ण परिवर्तित विश्व की। यही वजह है कि मा. पा. दूसरे दलों द्वारा सुझाए गए विचारों, नीतियों, आदर्शों व दर्शन (यदि कोई है) का खंडन करती है।

- ऐसी संस्कृति का विकास जो बच्चों की शिक्षा के समानांतर हो।
- यह उसकी (बच्चे की) क्रियात्मक योग्यता के साथ ही कला, संगीत, काव्यादि के माध्यम से उसके सौंदर्य बोध का विकास भी करेगा।
- विभिन्न शैक्षिक संस्थानों द्वारा बाल व युवा वर्ग का सांस्कृतिक विकास।
- स्व–प्रबंधकारी प्रोजेक्ट्स को सरकार का साथ।
- ना राज्य, ना देश संस्कृति पर, इसके विकास पर अपनी शक्तियों का ग़लत प्रयोग करेगा।

सांस्कृतिक विवाद, वार्तालाप के लिए अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय बातचीत को बढ़ावा मिलेगा।

- सांस्कृतिक मॉडल्स का आयात नहीं होगा।
- जनसंचार सांस्कृतिक वार्तालाप की सेवा में रहेगा।

शिक्षा

शैक्षिक ढाँचे में परिवर्तन व पुनर्निर्माण के लिए वर्तमान आवश्यकताओं को देखते हुए कानून बनेंगे जिनका जन्म उन राष्ट्रीय वाद–विवादों, वार्तालाप से होगा जिसमें अभिभावक, शिक्षक, स्नातक व छात्र शिरक़त करेंगे, इन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर–

- धर्म–निरपेक्ष, मुफ़्त व अनिवार्य शिक्षा (के. जी. से हाई स्कूल)
- विद्यार्थियों, शिक्षकों व प्रबंधन स्टाफ़ की सह–सरकार जिसमें मौलिक स्तर पर अभिभावकों को भी शामिल किया जाएगा।
- शिक्षण–विधियों में सुधार, प्राधिकरण व्यवस्था, अनिवार्यता व लिंग भेद पर रोक।
- अंतःकरण की स्वतंत्रता , समानता की गारंटी।
- स्थिरता, वस्तुनिष्ठ चुनाव (अध्यापक व प्रबंधक स्टाफ़), उचित प्रतिकार।
- नई शैक्षिक इमारतों का निर्माण।
- शिक्षक–शिक्षार्थी अनुपात में सुधार।
- छात्रों के लिए मुफ़्त पाठ्य–पुस्तक, सामग्री, कैन्टीन व छात्रावास।
- मुफ़्त परिवहन।

विश्वविद्यालय

- विश्वविद्यालयों का विकेंद्रीयकरण, विषय संबंधी क्षेत्रों के लिए कॉलेज, पॉलिटेक्निक की स्थापना।
- चार दलीय सह–सरकार (शिक्षार्थी, शिक्षक, प्रबंधक स्टाफ़, राज्य)
- विश्व विद्यालय कैन्टीन।
- महाविद्यालयी सहकारी उत्पादन, भवन–निर्माण, अनुसंधान, उपभोग हेतु।
- छात्रवृत्तियों व सब्सिडियों में वृद्धि।
- पूर्ण सहकारी कॉलेजों की स्थापना जिन्हें सरकार की सहायता प्राप्त हो और जहाँ प्रतिव्यक्ति शुल्क की उगाही न हो।
- निजी कॉलेजों में प्रतिव्यक्ति शुल्क की जवाबदेही।

राज्य व न्याय

मानवतावाद के लिए सबसे ज़रूरी है ऐसा मनुष्य व समाज जिसके लिए सबसे अहम मूल्य

है—जीवन। मानवतावाद हिंसा, दण्ड व मृत्यु के (मृत्युदंड) के विरुद्ध है।

- मानवतावादी सरकार में मृत्युदंड नहीं होगा।
- राजनैतिक जवाबदेही व राजनैतिक दलों के कानूनों का कानून।
- शीघ्र जाँच।
- मुफ़्त कानूनी सहायता तथा न्यायिक व्यवस्था में सुधार।

सहकारिता एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था आजकल के आर्थिक तंत्र जो कि मुख्यतः पूँजीवादी है, को सहकारी तंत्र में बदलने के लिए आधुनिक विज्ञान व तकनीकी आधारित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है। मा. पा. द्वारा प्रस्तावित सहाकारितावाद, आर्थिक—राजनैतिक सुधारों के लिए एक नया कार्यक्रम है जो सहकारियों व सहकारिता संबंधी कानूनों के सुधार से आरंभ होगा।

ये बदलाव सहकारितावाद के स्तर को एक राजनैतिक—आर्थिक तंत्र के स्तर तक पहुँचा देंगे, यह तंत्र मानवतावाद का होगा।

- सहकारियों के यथार्थ स्वरूप को क़ायम रखने व अशुद्धियों से बचाने के लिए सहकारिता संबधी वर्तमान कानूनों में बदलाव व सुधार।
- यथार्थ सहकारी बैंकिंग की तरक्की।
- बहुदेशयी निगमों से औद्योगिक विकास की स्वतंत्रता।
- सभी आर्थिक क्षेत्रों में सहकारियों को बढ़ावा देकर ग़रीबी व बेरोज़गारी पर नियंत्रण।
- दिवालिया तथा उन इंटरप्राइज़ों को सरकारी सहायता से सहकारियों में बदलना जो अपने कर्मचारियों/कामगारों के वर्तमान व भविष्य के साथ समझौता करते हैं।
- घरेलू व एशियाई मंडियों के लिए लाभकारी राष्ट्रीय उद्योग को बढ़ावा देना।
- कच्चे माल उपलब्ध कराने वाले क्षेत्रों में उद्योग स्थापित कर विकास के क्षेत्रीय केंद्रों में बढ़ावा देना।
- पुनर्नवीनीकरण योग्य व वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों का विकास।
- मध्यवत्रियों को कम करने हेतु सच्चे सहकारियों द्वारा कृषि—उत्पादन का वाणिज्यीकरण।
- संसाधनों के क्षेत्रीय भण्डारण के लिए सुविधाओं का विकास।

वन

- औद्योगिक उपयोगिता के लिए प्रस्तुत प्रजातियों को बढ़ावा देना।
- मृदा पुनः प्राप्ति, नए वृक्ष लगाना व वन—विस्तार।
- लकड़ी के प्रयोग के लिए सहकारी।

मछली पालन

- शीत भंडारण उद्योगों के विकास के समानांतर पूरी तटरेखा के साथ मत्स्य—पालन बंदरगाह व पोर्ट निर्माण।

- सहकारी पोत–प्रांगण निर्माण।

खनन

- तकनीकी विषयों में राज्य में परामर्श व तालमेल से कार्य करने वाले खनन व तेल ड्रिलिंग सहकारी संस्थाओं का निर्माण।
- आयातित खनिज के विकल्प के रूप में तथा निर्यात में वृद्धि के लिए खनन का विकास।

अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था

- विश्व बैंक या आई. एम. एफ. से ऋण लिए बिना विकास।

उभयनिष्ठ एशियाई मार्केट

- क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को नियमित, नियोजित व अनुसंधान के लिए एशियाई देशों की व्यापार संघों, राजनैतिक दलों व सरकारों के प्रतिनिधियों से बने संगठन का निर्माण।
- तकनीकी विकास में सहकारिता।
- क्षेत्रीय स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने हेतु एशियाई देशों के बीच उत्पादन के लिए सीमा अवरोधों में कमी।
- साधारण प्राकृतिक संसाधनों को मिलकर खोज।

विदेश व्यापार

- ऐसे सरकारी ढाँचे का निर्माण जो राष्ट्रीय सहकारिता व उद्यमों के साथ सभी देशों के साथ मुक्त व्यापार की गारंटी दे।
- राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों को ध्यान में रखते हुए निर्यात को प्रोत्साहन।
- मूलभूत उद्योगों, स्वास्थ्य संबंधी वैकल्पिक आयात का राष्ट्रीय उत्पादन के साथ अभिविन्यास।
- ग़ैरज़रूरी आयात में कमी, रोक।
- वाणिज्यिक निर्यात, लेन–देन में गंभीरता की गारंटी।

विदेशी पूँजी व अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग

- विभिन्न विशिष्ट क्षेत्रों में विदेशी पूँजी का राष्ट्रीय हित में अनुप्रयोग कड़े संरक्षण में हो।
- विदेशी बैंकों व वाणिज्य का राष्ट्रीयकरण।
- प्रादेशिक अर्थव्यवस्था से जुड़े एशियाई बैंक, आर्थिक संस्थानों के साथ विशेष व्यवहार।
- अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द

मा. पा. अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द व अहिंसा की नीति का पालन करेगी जो इन सिद्धांतों पर आधारित होगी–

- जनता के मुक्त संकल्प का सम्मान तथा दख़लअंदाज़ी का विरोध।
- सभी देशों से शांतिपूर्ण संबंध।
- स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे देशों के साथ सौहार्द के साथ अंतर्राष्ट्रीय कर्मठता।
- विश्व व प्रादेशिक स्तर पर प्रगतिशील व आनुपातिक शस्त्रापहरण।

- परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण ढंग से प्रयोग।

एशिया में

- स्थायी शांति संधियाँ करना।
- प्रदेशों का त्वरित व आनुपातिक असैन्यीकरण।
- एशियाई सीमा अवरोधों की समाप्ति।
- राजनैतिक दलों के प्रतिनिधित्व में एशियाई संसद।
- एशियाई अधिकरण के साथ मानवाधिकारों का स्थायी आयोग।
- एन. पी. टी. संधि को एशिया के डीन्यूक्लिपराइज़ेशन संधि से संबद्ध करना, प्रगतिशील व आनुपातिक रूप से शस्त्र–निर्माण में कमी आदि।
- उभयनिष्ठ एशियाई मंडी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य आज इस अमानवीय तंत्र में लाभ का स्रोत बना दिया गया है और एक बड़ा तबका इससे लाभान्वित नहीं हो पाता है। इसे हर व्यक्ति का अधिकार होना चाहिए–

- स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान विभिन्न समस्याओं, जैसे–बाल कुपोषण, संक्रमण, बीमारियाँ आदि को प्राथमिकता से हल कर देने के लिए।
- जब तक मुफ़्त सामाजिक औषधि का तंत्र न हो, सरकारी व सामुदायिक सेवाओं के एकीकरण के लिए स्वास्थ्य की एकीकृत योजनाएँ बनें।
- सरकार व सामुदायिक सेवाओं द्वारा मुफ़्त दवाइयाँ।
- भूख व कुपोषण पर नियंत्रण के लिए योजना बनाने में सरकार के साथ संव्यावसायिकों, तकनीकविदों व मेडिकल छात्रों की भागीदारी।
- मुफ़्त अस्पताल सेवा।
- स्वास्थ्य हेतु बजट में शीघ्र वृद्धि।
- राष्ट्रीय औषधोद्योग को बढ़ाने हेतु तकनीकी विकास।
- औषध में पर्याप्त/संपूर्णता के लिए सहकारी प्रयोगशालाओं का विकास।
- औषधि के वाणिज्यीकरण में ग़ैरज़रूरी मध्यस्थता की समाप्ति।
- सुरक्षा नियमों के विरुद्ध बनने वाली औषधियों पर रोक।
- नए अस्पताल का निर्माण।
- अस्पताल व क्लिनिक की ओर जनता का अधिकाधिक ध्यान खींचना।
- निरोधी दवाएँ समाप्त की जाएँ : पागलख़ाने बंद किए जाएँ, सहायता केंद्र खोले जाएँ।
- बेरोज़गारों के लिए सामाजिक स्वास्थ्य बीमा।
- पुराने व आमनवीय उपचारों पर रोक ;मसमजतवीवबाद्ध ।
- सहकारी समुदाय, सामाजिक सेवाएँ (व्यापार संघ आदि)।
- तकनीकी अनुसंधान व विकास के लिए एशियाई सहयोग।

भवन निर्माण (आवासन)

सहकारी तंत्र व सरकार द्वारा बनाए गई योजनाओं के माध्यम से एक प्रतिष्ठित आवास के संवैधानिकाधिकार की पूर्ति पर आवास नीतियों का ध्यान हो। आरंभ में, यह आपात्काल में उस शहरी व ग्रामीण प्रबंधन में सुधार लाएगा जहाँ जीवन संबंधी स्थितियाँ बेहद कम हैं। साथ ही, राष्ट्रीय आवास हानि की समस्या हल करने हेतु एक एकीकृत योजना बनाई जाएगी।

प्रादेशिक स्तर पर तकनीकी, श्रम, संसाधन, सामग्री को खास महत्व दिया जाएगा। संव्यावसायिक, शिक्षार्थी, तकनीशियन, प्रयोगकर्ता योजना, डिज़ाइनिंग व रचना में भागीदार होंगे ताकि प्रगतिशील विकेंद्रीयकरण संभव हो सके–

- बेकार आवासन को रोकना।
- लगान/शुल्क को बढ़ावा व सुरक्षा।
- सहकारी आवासन प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा व संरक्षण।
- आवासन के डिज़ाइन, दिशा व रचना हेतु विश्वविद्यालयों, सहकारिताओं व सरकार के बीच तालमेल।
- विभिन्न सेवाओं, सुविधाओं (स्वास्थ्य व अन्य), परिवहन, विद्यालय आदि को ध्यान में रख आवास का एक न्यून डिज़ाइन तैयार करना।
- आवासन को बढ़ाने व सुधार लाने हेतु ऋण।
- पारिवारिक आय व किराये के बीच अनुपात का नियम।
- स्वदेशी आवासन तकनीकियों संबंधी विषयों में तटस्थ ;दवद.ंसपहदमकद्ध देशों के साथ सहयोग व विनिमय।

पर्यावरण

- पर्यावरण संबंधी अपराधों को सज़ा देते हुए आरक्षण, संरक्षण, सुधार व पुनः प्राप्ति (पर्यावरण की) का कानून।
- शहरीकृत पर्यावरण प्रदूषण पर रोक।
- बार–बार होने वाली प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के कार्यक्रम।

विज्ञान एवं तकनीकी

मा. पा. विज्ञान–तकनीकी विकास को मानवता का पैतृक धन मानती है अतः अधिकार–पत्रों व लायसेंसों में सुधार लाया जाएगा।

- समाज, संस्कृति व अर्थव्यवस्था के साथ विज्ञान व तकनीकी का संबंध।
- युवा वर्ग को समर्थ बनाकर तथा विदेशी तकनीकी हस्तांतरण के माध्यम से इस क्षेत्र में विकास करना।
- राज्य व ज़िलों की पहल को बढ़ावा।
- विज्ञान के विकास व समन्वय के लिए अंतरानुशासित संस्थान।
- सूचना–शिक्षण ;प्दवितउंजपबेद्ध को बढ़ावा, प्रोत्साहन।
- हर स्तर पर आँकड़ों के बैंक।

- एशियाई व गुट–निरपेक्ष देशों के साथ वैज्ञानिक व तकनीकी सहयोग बिना सैन्य व राजनैतिक दख़ल के।
- विज्ञान व तकनीकी का रुख़ विशेषकर जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को बढ़ाकर स्थितियाँ सुधारने के लिए तथा शिक्षा व सूचना का स्तर बढ़ाने के लिए बना रहेगा।

नोट नं. 1–हमारा मानवतावाद

"हमारे मानवतावाद के विषय में" अनुच्छेद और साथ ही हमारा आदर्श वाक्य–मनुष्य से ऊपर कुछ नहीं और मनुष्य दूसरे से निम्न नहीं" कई बार अनावश्यक ग़लतफ़हमियाँ व विवाद खड़े कर देते हैं। यह पार्टी स्वीकारती है कि ईश्वर, देश, राज्य व तंत्र को सदैव मनुष्य की भलाई व हित के लिए होने चाहिए। पार्टी इनके नाम पर जनता के शोषण व उनके विरुद्ध हिंसा की विरोधी है।

ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं जहाँ मानवाधिकारों, नागरिक स्वतंत्रता को ईश्वर, देश, राज्य, तंत्र के हितों के नाम पर रौंद दिया गया।

इसीलिए मा. पा. मनुष्य के हितों, स्वतंत्रता को सामाजिक क्रियाकलापों का मुख्य केंद्र मानते हैं।

विपक्ष सदैव उन सिद्धांतों, तानाशाही, प्राधिकरण शासन–पद्धतियों व सैन्यीकरण का साथ देता है जो मानवतावाद के विरुद्ध है।

"मानव से उच्च कुछ नहीं" इसी विचारधारा का परिचायक है। मानवतावाद ईश्वर, देश, राज्य, तंत्र की उस अवधारणा का विरोध करता है जो उसे मनुष्यता के विरुद्ध है और उसकी स्वतंत्रता में बाधक है।

कौन भूल सकता है कि जातीय श्रेष्ठता, भगवान की इच्छा व राज्य सुरक्षा के नाम पर कितने ही लोग मारे गए, पीड़ित किए गए तथा गुलाम बनाए गए?

ऐसा क्यों है कि स्वार्थी लोग (सैनिक (धनवान)) "स्वतंत्रता सैनानी", हत्यारे "देवदूत", घुसपैठिया सेना "स्वतंत्रता बल", तानाशाह "स्वतंत्रता व लोकतंत्र के रखवाले" तथा डकै़त, लुटेरे "कानून–व्यवस्था के रक्षक" कहलाते हैं?

मनुष्य पर ऐच्छिक (अपनी इच्छा) से थोपे गए आदर्शों व हिंसा, धमकी, डर से उनका पालन करवाने की प्रवृत्ति के अनुसार जाना जा सकता है कि मनुष्य से उच्च ईश्वर, राज्य, राष्ट्र व तंत्र की अवधारणा के परिचायक क्या सोच रखते हैं। अपने इन हिंसक, आक्रामक तरीकों को वे बड़ी आसानी से "सुरक्षा" का जामा पहना देते हैं।

नोट :–

"सक्रिय अहिंसा"

सामाजिक–राजनैतिक क्रियाकलापों के लिए मा. पा. की कार्य–प्रणाली है 'सक्रिय अहिंसा'। यही तरीका है हिंसा से लड़कर समाज के मानवीकरण का।

हिंसा के राजनैतिक, भौतिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक रूप से लड़ने के लिए मा. पा. अहिंसा को हथियार बनाएगी। साथ ही वह जनता को भी इसमें भागीदार बनाएगी।

अहिंसा के अंतर्गत अन्याय, का सार्वजनिक विरोध, किसी भी रूप में हिंसा में भागीदार न होना,

अवज्ञा, प्राधिकरण का अहिंसक विरोध अर्थात् हिंसा से लड़ने हेतु संघर्ष करेगी पर अहिंसा से।

हिंसा के विरुद्ध हिंसा ना तो आदर्श है, न व्यावहारिक। असल में यह हिंसा–प्रतिहिंसा की कड़ी को जन्म देती है। हमारे लिए साधन व साध्य ऐसे हैं जैसे बीज और पेड़। बारूद व खून से इंसानियत को सदैव नुकसान हुआ है, मानवता में पीड़ा, यातना, डर, दहशत का स्थान नहीं है।

कहा जाता है कि बालक दिमाग़ से पहले मुक्के चलाता है यानी कि हिंसा एक नासमझ बुद्धि का प्रमाण है पर अहिंसा बुद्धिजीवियों का शस्त्र है। अहिंसा की शक्ति का उदाहरण हैं–गांधी, मार्टिन लूथर किंग और कई महान शख़्स।

हिंसा के तंत्र की कमज़ोर कड़ी हैं वे मस्तिष्क जो इसके पीछे होते हैं, इन मस्तिष्कों को प्रभावित कर तंत्र को बदलना संभव है।

सक्रिय अहिंसा केवल एक निष्क्रिय, कायर, भयभीत शांतिवाद नहीं है। यह एक गतिशील, वीर, विद्रोही लड़ाकापन है जो हिंसा के रूप, मूल के विरुद्ध है। साथ ही यह विभिन्न जातियों, लोगों, संप्रदायों के बीच संचार, बातचीत का सेतु है। जिन संसाधनों (मनुष्य, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीकी आदि) का प्रयोग हिंसा बढ़ाने के लिए होता रहा है व आज भी रहा है यदि इसी मात्रा में अहिंसा के प्रोत्साहन के लिए हो तो हमारे सामने कुछ ही वर्षों में एक नया विश्व होगा।

नोट 3 अहिंसक सामर्थ्य

यह समझना कि हिंसा सदैव कामयाब होती है, ग़लत है। रोज़मर्रा के जीवंत उदाहरण सिद्ध कर सकते हैं कि हिंसा अपने क्षणिक लक्ष्य या कभी–कभी वे भी पाने में असपफल होती है।

जहाँ हिंसक मुक़ाबले होते हैं, वहाँ एक विजेता के साथ एक पराजित व्यक्ति भी होता है। इतिहास इसका गवाह है। पुलिस रिकॉर्ड ऐसे कितने ही केस प्रस्तुत करते हैं जहाँ हिंसा जारी है।

अहिंसा सदैव मनचाहे नतीजे नहीं देती, हम मानते हैं। पर यह हथियार कई असफलताओं के साथ सफलताओं के उदाहरण भी रखता है।

हम कह सकते हैं कि शुरुआत में संभव है प्रताड़ना आदि से हिंसा सफल हो मगर यातनाएँ विजेता व पराजित दोनों पक्षों को झेलनी पड़ती है। उदाहरण के लिए हो सकता है कि विजेता इस स्थिति में ही न रहे कि वह इस (जीत) लाभ उठा सके या उसमें ग्लानि भावना आ जाए जैसे महान सम्राट् अशोक में आई थी या हो सकता है विजेता को पराजित के प्रतिशोध, और अधिक हिंसा का भय रहे, स्टेलिन की उग्रवादी राज्य इसका उदाहरण है। हिंसा के समर्थक अपाहिज 'क्रान्तिकारी' हैं, वे डरपोक हैं क्योंकि वे दूसरों को रणभूमि में भेजते हैं, वे मूर्ख हैं क्योंकि वे जीत को देख लेते हैं पर उस हानि को नहीं आँक पाते, जो उनके पक्ष को हुई है।

जहाँ तक क्रियान्वयन व संचालन संबंधी कठिनाई की बात हे, वह हिंसा व अहिंसा दोनों में है पर यह और भी बुरा है कि क्रियान्वयन के बाद (हिंसा के) भयंकर परिणामों को भी देखना पड़ता है, प्रतिकार, प्रतिहिंसा के रास्ते ढूँढने पड़ते हैं, ये समस्याएँ अहिंसा से शायद ही आएँ।

संग जू रचित "द आर्ट ऑफ़ वॉर" लेख (चाइनीज़) के अनुसार असली योद्धा वह है जो युद्ध की

नौबत न आने दे, दिमाग़ का प्रयोग करे, हथियारों का नहीं। बुद्धि, प्रचार, आर्थिक व सांस्कृतिक विनिमय, राजनैतिक वार्तालाप, कूटनीति से आज हिंसा को टाला जा सकता है।

अतः मा. पा. स्वीकारती है कि अहिंसा की शक्ति के सामने हिंसा की बिसात नहीं। हर हिंसक साधन के स्थान पर अहिंसक साधन हो सकता है और कामयाबी मिल सकती है; दोनों ही प्रतिक्रियाओं की कड़ी को जन्म देते हैं, फ़र्क इनके परिणामों में होता है।

अहिंसा स्वार्थी लोगों की समझ से बाहर है। यह उनके लिए है जो केवल वर्तमान ही नहीं, भविष्य की चिंता भी करते हैं, जो कुछ प्राप्त करने से पहले कीमत आँकते हैं।

संक्षेप में, अहिंसा मानव का सर्वश्रेष्ठ गुण है जबकि हिंसा अधम।

ख़ून, क़त्ल सभ्यता के आधार नहीं हैं। हिंसा के ख़िलाफ संघर्ष के उदाहरण दर्शनशास्त्र, धर्म, संविधान और महान हस्तियों की कहानियों में हैं। हिंसा नपुंसकता, दुर्बलता, असंतुलन, पशुता, लालच, डर, घबराहट का उदाहरण व फल है।

दुर्भाग्यवश, मनुष्य के अंतर्मन में प्रकाश व अंधकार के बीच संघर्ष समाप्त नहीं हुआ इसीलिए बाह्य ताकत उसकी आत्मा से जीत जाती हैं

नोट नं. 4 केंन्द्रीय मूल्य के रूप में मनुष्य

हमारा उद्देश्य कथन स्पष्ट करता है–"मनुष्य से उच्च कुछ नहीं और कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य से निम्नतर नहीं।"

इतिहास गवाह है कि मनुष्य अपने बंधुओं का शिकार बना है पर इतिहास मनुष्य–निर्मित है, अतः इसे वही बदल सकता है।

वे जो मनुष्य से, उसकी स्वतंत्रता व हित से अधिक प्राथमिकता किसी अन्य विषय को दें, मानवतावादी नहीं हो सकते। राज्य, जाति, धन, राजनीति, तंत्र यदि मानव से अधिक महत्व पाएँ तो यह मानवता का शोषण है।

"राष्ट्रीय सुरक्षा", "विश्वास की रक्षा", "समृद्धि" तथा "कामगार वर्ग की तानाशाही" के नाम पर क्रूरताओं के उदाहरण हमारे सामने हैं मा. पा. उन सेवाओं के ख़िलाफ़ है जो एक ओर मानव की सेवा का दावा भी करती हैं पर असल में उसे पीड़ित करती हैं।

"कुछ लोग मनुष्य को वस्तु की भाँति प्रयोग में लाना अपना हक़ मानते हैं। ये मनुष्य को अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, नियंत्रण की वस्तु मानते हैं। यानी कुछ स्वयं की "स्वतंत्रता" व "प्रसन्नता" के लिए औरों से इन्हें छीन लेते हैं।

जब मनुष्य को केंद्रीय मूल्य बनाया जाए तो हर सेवा में उसकी स्वतंत्रता व प्रसन्नता निहित होनी चाहिए अन्यथा, ये सेवाएँ कुछ के तुच्छ हितों की होकर रह जाएँगी, इनका विरोध अपरिहार्य बन जाता है। मनुष्य अपने इतिहास का रचयिता है, अपने भाग्य का रचयिता है।

केवल यातनाओं व शारीरिक पीड़ाओं को सहते हुए, इनके विरुद्ध विद्रोह करके ही मनुष्य स्वतंत्रता, प्रसन्नता को प्राप्त कर सकता है और ऐसा इतिहास बना सकता है जो हर मानव हृदय में बस जाए।

नोट– 5 विशुद्ध सहकारितावाद

मानवतावादी आदर्शवाद से सुसंगत, मा. पा. आर्थिक मामलों में स्वयं को सहकारितावादी मानती है।

अतः मा. पा. दोनों असफल तंत्र पूँजीवाद तथा साम्यवाद से अलग है। न तो मनुष्य से ऊपर धन है, न राज्य। मा. पा. उत्पादन की सहकारिताओं, उपभोग व सहभोग की सहकारिताओं का प्रस्ताव रखती है।

आजकल की सहकारिता असल में सही अवधारणा का बिगड़ा हुआ रूप है। यही कारण है कि लोग अब इनकी क्षमता व पर्याप्तता के विषय में संशय रखते हैं। उनके निर्णय व लक्ष्यों पर इस बिगड़े रूप का प्रभाव दिखता है।

सहकारिता को एक संपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तंत्र बनाने से पूर्व मा. पा. इसे अपने आप में समृद्ध बनाना चाहती है।

कम से कम, एक राष्ट्रीय तंत्र ऐसा हो जहाँ सहकारिता पूँजीवाद या साम्यवाद के सागर में टापू बनकर ना रह जाए। ऐसा तंत्र जहाँ सारे कार्य सहकारितावादी सिद्धांतों (जनसेवा, शिक्षा, प्रादेशिक अर्थव्यवस्था, आदि) के अनुसार पूरे हों।

उद्यम का प्रकार : पूँजीवादी	साम्यवाद	सहकारितावाद
(निजी स्वामित्व)	(राज्य स्वामित्व)	(प्रयोगकर्ता स्वामित्व)
उद्देश्य : निवेशक/स्वामी	जनता की ओर से साधनों	सहभागगियों की
की सम्पत्ति–वृद्धि	(उत्पादन के) पर नियंत्रण	आवश्यकताओं की पूर्ति के
		लिए सौहार्द में समान प्रयास
निर्देशन : स्वामी का व नियंत्रण	राजनैतिक सत्ता/राज्य	कामगार/उपभोक्ता
संगठन व		
निर्णय : पिरामिडाकार आकार में	पिरामिडा आकार में	समतावादी–लोकतांत्रिक
ऊपर से नीचे की ओर	ऊपर से नीचे की ओर	
निर्देशन संगठन और		
कार्य में भागीदारी : कार्य में	कार्य मे	कर्मचारियों में
प्रवेश : निषेध	निषेध	लोकतांत्रिक
प्रोत्साहन : प्रतियोगिता, व्यक्तिगत		
स्वार्थ; शोषण	नौकरशाही, शोषण	सौहार्द, वार्तालाप व सहयोग
समस्याएँ : सामाजिक शोषण	नौकरशाही,	जागरण, निहित स्वार्थों
व सामाजिक	कामगारों का	(निजी) का खंडन
ग़ैर ज़िम्मेदारी	शोषण, सहयोग की कमी	

वर्तमान में, विश्व में कोई सहकारितावादी देश व सरकार नहीं है पर कुछ आधे–अधूरे प्रयास कुछ देशों जैसे–स्वीडन, यूगोस्लाविया, इज़राजय आदि में जरूर हो रहे हैं।

सहकारितावाद में, प्रतिभागी सहभागी हैं, प्रबंधक हैं तथा कर्मचारी भी वही हैं। उनका ध्यान उन मांगों की पूर्ति पर है जो सामुदायिक सहयोग ;बवदजतपइनजपवदद्ध कार्य व निर्णयों में भागीदारी के लिए ज़रूरी हैं। वे सौहार्द में कार्य करते हैं।

नोट– 6 भेदभाव का विरोध

मा. पा. का मूल आदर्श है कि किसी भी पुरुष/स्त्री को उसकी जाति, रंग, लिंग, आयु, राष्ट्रीयता, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, आदि के आधार पर भेदभाव का शिकार न होने दें।

ये भेद अधिकतर प्राथमिक नहीं हैं ओर उन्हें भी अन्य लोगों की भाँति अधिकार है।

मा. पा. राष्ट्र संघ द्वारा घोषित अधिकारों से भी अधिक अधिकारों की पक्षधर है। मा. पा. ऐसे हर आदर्श को नकारती है जो कुछ मनुष्यों को 'मिथ्या मानव' , 'उप–मानव' या द्वितीय श्रेणी मानव में बाँटती हैं। और उन्हें विकल्पों व विकास की संभावनाओं से वंचित रखती हैं

मा. पा. विरोध करती है उस अवधारणा का जो मनुष्यों की नीचता या श्रेष्ठता का मानती है। इस अवधारणा का प्रयोग तानाशाही, शोषण, हनन को सही ठहराने वाले लोग करते हैं। अतः मा. पा. जातीय श्रेष्ठता के विचारों को नहीं मानती, नहीं मानती कि कोई जाति, लिंग ऐसा हो सकता है जिसे अधिकारों से वंचित रखना उचित है, पार्टी दैवी जातियों में अविश्वास रखती हैं

इस प्रकार के विश्वास सौहार्द, सहयोग व विकास के विरुद्ध हैं। विकास, शांति, स्थिरता, समृद्धि जैसे मूल्य कुछ तक सिमट कर रह जाते हैं।

टिप्पणी–7

अन–एकाधिपत्य तथा विकल्प का सिद्धांत

मा. पा. स्वतंत्रता की मूर्त राजनैतिक अभिव्यक्ति के रूप में विकल्प के सिद्धांत का प्रस्ताव रखती हैं अतः मा. पा. किसी भी राजनैतिक मुद्दे पर मतदाताओं की राय, जनमत–संग्रह, मतदान तथा किसी अन्य प्रकार के सर्वपरिचित परामर्श को बढ़ावा देती है जिससे जनसाधारण विभिनन निर्णायक विकल्पों में से एक का चयन करते हुए फैसला ले सकें। यह एक प्रकार का सहभागितापरक एवं प्रत्यक्ष लोकतंत्र है।

एक प्रकार से यह बेहतर प्रतिक्रियाओं और सुझावों से युक्त एक सरकार है। यह जनसाधारण के जीवन और भविष्य को प्रभावित करने वाले अहम मुद्दों के विषय में निर्णय लेने की प्रक्रिया में थोपी गई निरंकुशता या तानाशाही का विरोध करती है।

मा. पा. बाध्यता और निषेधता, उनके कारण मिलने वाले दंड के स्थान पर ज़िम्मेदारी और ज्ञान से युक्त विकल्प और चयन का समर्थन करती है।

इस प्रकार मा. पा. सभी प्रकार के एकाधिपत्य, जैसे– संगठनवादी, आर्थिक एवं वैचारिक आदि का विरोध करती है।

संगठनात्मक एकाधिपत्य में एक या कुछ व्यक्ति बाकी लोगों के लिए चीज़ों का प्रबंधन करते हैं और निर्णय लेते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि एक संगठन सभी अधिकारों का लाभ उठाते हैं जबकि बाकी एक वैयक्तिक संगठन के रूप में स्वयं को स्थापित करने के अधिकार से वंचित रहते हैं और वह अपने सदस्यों के अनुपात में समस्त अधिकारों का प्रयोग करते हैं। एकल व्यापार संघ, एकल, राजनैतिक दल, तानाशाह आदि संगठनात्मक एकाधिपत्य के उदाहरण हैं।

आर्थिक एकाधिपत्य में एक या कुछ व्यक्ति आर्थिक संसाधनों तथा शक्तियों को अपने हाथ में रखते हैं। ये एक या कुछ व्यक्ति दूसरों पर प्रतिबंध लगाते हुए विभिन्न तरीकों से उन संसाधनों या शक्तियों को प्राप्त करते हैं और उनका भरपूर प्रयोग करते हैं। (उदाहरण के लिए प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग

करने संबंधी कुछ विशिष्ट अधिकार, हेराफेरी, ताकत या जोड़–तोड़ करके उन्हें प्राप्त करना व बनाए रखना।)

वैचारिक एकाधिपत्य में एक या कुछ व्यक्ति कुछ मुद्दों पर अपने अधिकार या ताकत को बनाए रखते हैं चाहे बाकी उस बारे में सोचें या न सोचें। उनके विश्वास, अभिव्यक्ति आदि को अनदेखा कर दिया जाता है। उदाहरणार्थ–प्रशासनीय वैचारिक हठ धर्म/कट्टरपना, प्रशासनीय राज्य धर्म, असहमति प्रकट करने वाले को प्रताड़ित करना, सरकारी या अदालती जाँच–पड़ताल आदि।

सभी प्रकार के एकाधिपत्य में समग्र में से एक वर्ग या सेक्टर सभी शक्तियों, चीज़ों, संभावनाओं आदि पर स्वामित्व या अधिग्रहण करते हैं (रंग कब्ज़ा करने की कोशिश करते हैं) चाहे बाकी लोगों को नुकसान क्यों न उठाना पड़े।

जहाँ एकाधिपत्य होता है वहाँ विकल्प की व्यवस्था नहीं होती और जहाँ विकल्प नहीं होता वहाँ स्वतंत्रता नहीं होती। अतः एकाधिपत्य मानव मात्र की स्वतंत्रता व खुशी का विरोध करता है।

मा. पा. एकाधिपत्य के विरुद्ध आवाज़ उठाती है और संघर्ष करती है। पार्टी विचारों, विकल्पों, जीवन जीने के तरीकों, राजनैतिक व्यवस्थाओं आदि की बहुलता, वैविध्य का आदर करती है। साथ ही यह मानवमात्र को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाती।

नोट–8

पारंपरिक दल, राजनीतिज्ञ व राजनीति

वर्तमान राजनैतिक पार्टियाँ भारत को वह परिवर्तन नहीं दे सकतीं जो आवश्यक है–मानववादी परिवर्तन

उनके उद्देश्य, संगठन, कार्य–प्रणाली पुराने पाश्चात्य नमूनों पर टिके हैं जो देश को अवनति की ओर ले जाते हैं।

चाहे जन–संबोधन हो, कार्य–प्रणाली या विषयों पर उनके विचार–ये पार्टियाँ कहीं भी जाति, उप–जाति, लिंग, रंग, भाषा आदि के भेदभाव से अछूती नहीं हैं।

अतः ये दल किसी न किसी समन्वय को आहत करते हैं, सामंजस्य व सौहार्द को हानि पहुँचाते हैं। इस कारण ये अशांति, हिंसा फैलाकर एकीकरण समाप्त कर रहे हैं। अपनी जाति, धर्म, लिंग, धन, प्रदेश, भाषा, रंग से पहचाने जाने वाले लोगों के या तो वे विरुद्ध होते हैं आर यदि साथ हों तो इसमें उनका स्वार्थ छिपा होता है।

ये दल अपने झूठे आदर्शों को ही झुठलाकर, किए गए वायदों से मकरते हैं। ये भारत के लिए नहीं निज हित के लिए राजनीति में हैं। ये मानवतावादी सभ्यता के शत्रु हैं।

इनके पास भेदभाव की समस्या का हल नहीं है क्योंकि ये खुद उसे बढ़ावा देते हैं।

ये इस विषय में कर ही क्या सकते हैं? एक राम–राज्य की कल्पना? प्राधिकृत हिंदूराज? श्रमिक वर्ग की तानाशाही? बिगड़ा हुआ गांधीवादी समाजवाद?

जिस तरह केले का बीज, नारियल नहीं उगा सकता, ये दल कभी मानववादी परिवर्तन नहीं उगा सकता, ये दल कभी मानववादी परिवर्तन नहीं ला सकते। अधिकाधिक ये संशोधक, प्रविधितंत्री या उदारवादी सरकार बना सकते हैं पर मा.पा. जैसा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन नहीं ला सकते।

महत्वपूर्ण मुद्दों की तरफ़ या तो उनका ध्यान जाता नहीं और कभी चला जाए तो वे पहल नहीं कर पाते क्योंकि इसके लिए दूरदृष्टि चाहिए जो उनके पास नहीं है। अतः तुच्छ हित व दबाव उनके निर्णयों में निहित होते हैं।

अतः वर्तमान में राजनीति, राजनीतिज्ञ व दल भ्रष्टाचार, मिथ्या नेतृत्व, घृणा, अनादर, निजहित की भावना से सराबोर हैं।

कितने ही उदाहरण हमारे समक्ष हैं जब जीवन, संपत्ति, राष्ट्रीय एकीकरण के विरुद्ध अपराधों में या तो इन दलों का बड़ा हाथ रहा है या कोई न कोई योगदान, यथार्थ उत्तेजना से या खिन्न असावधानी से।

इन दलों व राजनीतिज्ञों का इकलौता आदर्श है सत्ता पाना और उसे क़ायम रखना। अधिकतर सत्ता के लिए कुछ भी देने और लेने, करने–करवाने पर आमादा हैं। ये वे हैं जो साध्य के लिए कोई भी साधन अपनाते हैं। मा.पा. के लिए यह उल्टा है, कोई भी साध्य अशोभनीय साधनों से प्राप्त नहीं हो सकता।

नोट–9 राजनीति के नवीन तरीकों में भागीदारी क्यों?

- अनुभवों से सीखें, यदि ईमानदार, अहिंसक व्यक्ति संगठन व राजनैतिक सत्ता पाने में असफल होते हैं तो भ्रष्ट राजनीतिज्ञ व नौकरशाह उन्हें प्रताड़ित करते हैं।
- जिस प्रकार हिंसक तरीकों को हाथों–हाथ लिया जाता है, अहिंसा को भी संगठन की आवश्यकता है ताकि इसे दृढ़ता से कारगर बनाया जा सके।
- हम जिससमाज में रह रहे हैं, वह उन कदमों का फल है जो समाज–सुधार के लिए अपनाए गए या नहीं अपनाए गए।
- नाज़ुक समय जैसा कि आज है, में हम "औचित्य", "नज़र–अंदाज़ी" आदि का सहारा लेकर जनहित से दूर अपने निज हितों के पीछे भागें तो यह उचित नहीं।
- क्योंकि यदि हम एक बेहतर देश की आशा करते हैं तो अच्छा है कि इस दिशा में हम ज़रूरी क़दम उठाएँ।
- क्योंकि यदि एक जहाज नष्ट होने की कगार पर है तो यह पर्याप्त नहीं कि सभी अपने विषय में सोचें व औरों की तरफ पीठ कर भाग जाए, इससे वह अपना भी छोटा या बड़ा नुकसान करवा बैठता है।
- क्योंकि जनहित विषयों में भागीदारी का अर्थ हर पाँच वर्ष में एक बार मतदान से कहीं अधिक है। यदि हम नौकरों को घर पर कब्ज़ा करने दें तो पूरी संभावना है कि निरंकुश होकर वे हमारे अधिकार छीन लें।

नोट– 10 हिंसा–राजनैतिक साधन

यह बेहद शर्मनाक है कि 21वीं सदी में राजनीतिज्ञ अपने हितों, लाभ के लिए हिंसा का प्रयोग कर उसे बढ़ावा देते हैं। यह उनकी बुद्धि, उनकी मानवीय स्थिति तथा उनके कर्तव्य को शर्मसार करता है।

इतिहास व सामाजिक विषयों में ऐसे निर्दयी कानून हैं (जैसे व्यक्तिगत कर्म) जो लक्ष्य–प्राप्ति के लिए खून–खराबा, हिंसा को बढ़ावा देते हैं तथा आने वाले कल को ऐसा रूप देते हैं जहाँ केवल हिंसा की गुंजाइश है।

आप ऐसे संगठन को अच्छा कैसे कह सकते हैं जो संचालन के लिए हिंसा को शस्त्र बनाए? यदि लोगों के दिल न जीत पाए तो महान संगठन कैसे? लोग जो नियम नहीं मानना चाहते उन्हें थोपने में क्या महानता? क्या आप हर नीति को बलपूर्वक क्रियान्वित करने को बुदिद्धमत्ता कहेंगे?

हिंसा प्रयोग का अर्थ है अपनी कमजोरी, भीरुता, हार को स्वीकार करना। यह नैतिक व

संस्कारी शक्ति का समर्पण है। इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य में एक पशु निहित है। हम (मा. पा.) सभी पारंपरिक दलों को हिंसा का प्रवर्त्तक मानकर उनका विरोध करते हैं। अपने स्वार्थ को ध्यान में रख ये दल हिंसा को रोकने की बजाय उसे प्रयोग में ला, बढ़ावा देते हैं।

आरोप लगने पर वही बयान कि हम कार्यकर्ताओं को काबू नहीं कर पाए, अन्य दल ने आरंभ किया, किसी असामाजिक "तत्व" ने उनके नाम का दुरुपयोग किया, एक जाँच आयोग बिठाया गया है या लोगों के "प्राकृतिक" आवेश उभर आए आदि।

इन सबसे उनका पाखंड व खिन्नता छिपती नहीं दिखती है।

नोट–11

व्यक्तिगत परिवर्तन

मा. पा. के कार्यकर्ताओं के समक्ष यह बिंदु स्पष्ट है। अहिंसा, सामाजिक सौहार्द, सहयोग, व्यक्तिगत स्पष्टीकरण, सहयोग, टीम वर्क, प्रत्यक्ष संचार आदि हमारे कार्यकर्ताओं का व्यक्तिगत परिवर्तन कर रहे होते हैं, उस समय, जब वे जनता की सेवा में कार्यरत होते हैं।

यही कारण है कि मा. पा. में आने वाले पारंपरिक राजनीति के अनुयायी परिवर्तित हो जाते हैं या आशानुरूप माहौल ना पाकर स्वयं ही दल छोड़कर चले जाते हैं।

हम हिंसा का दमन करने की कोशिश करते हैं। अतः उचित सोच, उचित भावना, उचित कार्य के साथ मिलकर समाज व व्यक्ति दोनों में एक ही समय पर परिवर्तन लाने में सफल होते हैं।

दूसरी ओर वे जो सक्रिय भागीदार नहीं है या शासित वर्ग के लिए पार्टी ऐसे कार्यक्रम लाई है जिनमें शिक्षा, जनसंचार माध्यम, ऐच्छिक सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम मानवतावादी परिवर्तन व उन मानवतावादी आदर्शों का विकास करेंगे जिन्हें हमारे समाज, संस्कृति, विज्ञान, कला ने दबाकर रखा है। यह एक नई भारतीय नागरिकता को जन्म देगा जिसमें नए आदर्श, अर्थ, विषय, संस्कार व उत्तरदायित्व होंगे जो और मानवीय होंगे। अपनी विशेषताओं व क्रियान्वयन के साथ सरकारी नीतियाँ एक उचित माहौल प्रदान करेंगी जो इन सब वायदों को पूरा करेंगी।

नोट–12 मा. पा. का प्रारंभिक बिंदु

सभी पारंपरिक दल धार्मिक हठ की अनुयायी है, उनकी शुरुआत धर्म, धरोहर, संस्कृति, अतीत आदि के दुरुपयोग से हुई जिसका खामियाज़ा आम जनता को भुगतना पड़ा।

जबकि मा. पा. का प्रारंभ प्रत्यक्ष मानव जीवन की परिस्थितियों के निरीक्षण से, उसी समस्याओं व कारणों की जाँच से होता है और यह उनकी बेहतरी, स्वतंत्रता के लिए प्रस्ताव रखती हैं

उदाहरण के लिए शिक्षा, भोजन, रोजगार, नागरिक व मानवाधिकार के क्षेत्रों से हिंसा को हटाना ही हमारे कार्यों का लक्ष्य है जबकि भाषा, जाति, धर्म का "रक्षण" पीछे छूटता है।

दूसरे दल इन विषयों को (धर्म, रंग, आदि) अपने हित में प्रयोग लाते हैं तथा ये पाखंडी अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए मानवाधिकारों व हितों को रौंदते हैं।

मा. पा. इन विषयों का हल ढूँढती है पर उसका सबसे बड़ा लक्ष्य है मानवता की रक्षा, आदर्श, मूल्य, राजनीति, धर्म, भाषा, धरोहर, आदि को मनुष्य की सेवा करनी चाहिए ना कि मनुष्य को इनकी। अगर ऐसा होता है तो इसका अर्थ यह है कि कहीं कोई गलतफहमी है जिसे दूर करना निहायत जरूरी है।

लोगों को एक करना सही है, गलत है उन्हें बाँटना। उन्हें प्रसन्नता व स्वतंत्रता देना सही है, प्रताड़ना देना ग़लत। इसलिए मा. पा. व अन्य दल एक ही विषय पर सोचते हैं। उनके कार्य व कार्य–प्रणाली अलग हैं और जाहिर है, परिणाम भी।

नोट–13

हमारा प्रतीक

मा. पा. का प्रतीक मोबियस रिबन का नया रूप है, वे एक महान गणितज्ञ थे तथा स्थानों का प्राकृतिक वर्णन करते थे। इस रिबन को कोई भी बना सकता है। बस एक कागज या कपड़े के रिबन को घुमाकर इसके दोनों सिरों को मिलाकर अब यह बंद रिबन (एक छल्ला) एक विशेष गुण का मालिक है। इसकी केवल एक सतह है। एक सतत् रेखा इस रिबन के साथ खींची जा सकती है, बस इसके सिरों को बदलना है, बिना ड्राईंग रोके। यानी सिरे अबाधित रूप से परस्पर जुड़े हैं। यह रिबन अनंतता का त्रिसंरचनात्मक रूप है जिसका प्रयोग गणित व तर्कशास्त्र में होता है। अनंतता का यह प्रतीक दर्शाता है कि हम मानव को कैसे समझते हैं, या हम मनुष्य व उसके भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं, भविष्य जिसमें परिवर्तन व असीम संभावनाएँ हों। मनुष्य में बदलाव व विकास की अनंत संभावनाएँ हैं।

यह प्रतीक दो संसारों के संबंध को भी दर्शाता है : आंतरिक व बाह्य, अंतर्संबंध व्यक्ति व समाज में, सामाजिक व व्यक्तिगत परिवर्तन में, आदि। फीड़बैक का संबंध, लेन–देन का संबंध जो यूँ तो परस्पर विपरीत है पर अंतर्संबंध व अंतर्प्रभावित भी।

रिबन की सतह सफेद है, किनारे काले व पृष्ठभूमि नारंगी है।